फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 99 सितम्बर 1996

अपने बारे में इस अखबार के बारे में बात करने आप किसी भी दिन मजदूर लाइब्रेरी आ सकते / सकती हैं।

छोटी-छोटी बातें

★ खर्चा चलाने के लिये बढती संख्या में स्त्री व पुरुष, दोनों का नौकरी करना जरूरी बनता जा रहा है। ऐसे में बच्चों की दिक्कतें और भी बढ़ जाती हैं। परन्तु फिर भी, दस-बारह घन्टे फैक्ट्री/वर्कशॉप में काम करके लौटी माँ को हाथ-मुँह धोने के लिये पानी देना और चाय बना कर पिलाना तो पन्द्रह-अठारह साल के लड़के-लड़कियों द्वारा करना बनता ही बनता है।

दस घन्टे बाद लौटी माँ द्वारा आते ही पानी की चिन्ता करना, दूध लाने जाना, जवान हो रहे लड़के-लड़कियों के कपड़े धोने में जुटना, ठीक है क्या ?

★ नौकरी करना अपने आप में ही बहुत दुख-तकलीफें लिये है। बीमार होने पर तो वरकर के दुख-दर्द बहुत ही बढ़ जाते हैं। ऐसे में हम अपने बगल के किरायेदार के बीमार पड़ने पर उसकी तरफ देखने से भी परहेज करने लगते हैं कि कहीं कुछ करना न पड़ जाये। जब हम बीमार पड़ते हैं तब हमारे अगल-बगल के किरायेदार भी ऐसा ही व्यवहार करते हैं। यह सिलसिला बढ़ता जा रहा है। इससे हो यह रहा है कि हम सब की तकलीफें बढ़ रही हैं।

हालात यहाँ तक जा पहुँची हैं कि मुजेसर में एक चौदह-पन्द्रह साल का लड़का सुबह दस-ग्यारह बजे मर गया तब उसकी माँ दिन-भर लाश के पास बैठी जोर-जोर से रोती रही पर अगल-बगल के दर्जनों किरायेदारों ने ऐसे व्यवहार किया जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। पाँच बजे ड्युटी से लौटे सामने के मकान में रह रहे एक वरकर ने औरत के रोने का कारण उसके मकान मालिक के नौजवान लड़के से पूछा तब उसने बताया कि उसका लड़का मर गया है। उस वरकर ने आस-पास के पन्द्रह-बीस लोग इकट्ठे किये तब तक मृत लड़के का पिता भी ड्युटी से लौट आया और वे लोग लाश को शमशान ले गये।

अपने अगल-बगल में किसी के बीमार पड़ने पर दो मिनट उसके पास बैठ कर उसका हाल-चाल पूछना, पानी का पूछना, मँगवाने पर दुकान से दवाई ला देना आदि छोटी-मोटी बातें क्या हमारे लिये बहुत भारी हैं? क्या एक-दूसरे की ऐसी छुट-पुट मदद हम सब की तकलीफें कम करने की राह नहीं है ?

★ सुबह-सुबह पानी के झँझट, लैट्रीन के लिये लाइन, रोटी बनाने और जिनके परिवार साथ हैं उन द्वारा बच्चों को स्कूल के लिये तैयार करने आदि-आदि के कारण ड्युटी पर टाइम से पहुँचने के लिये रोज हम भागमभाग की हालात का सामना करते हैं। फरीदाबाद में डेढ़ लाख की तो सुबह की ड्युटियाँ होंगी ही। सड़कें खस्ता हाल.........

हर रोज सड़कों पर छोटे-बड़े एक्सीडैन्ट इन हालात का अनिवार्य परिणाम हैं। आज तुझे तो कल मुझे चोट लगती है। परन्तु किसी के चोट लगने पर उसे अनदेखा कर हम बगल से निकल जाते हैं। हमारे चोट लगने पर अन्य लोग भी ऐसा ही करते हैं।

एक्सीडैन्ट होने पर मामूली मदद भी बहुत राहत देती है। क्या ऐसा करके हम एक-दूसरे की, हम सब की तकलीफें कम नहीं कर सकते ?

★ दो मकानों में रहते पन्द्रह परिवार गली में एक नलका इस्तेमाल करते हैं। सुबह सवेरे या देर रात को अक्सर इस बात के लिये बड़-बड़ होती है कि नलके का हैन्डल किसने कहाँ रख दिया। डेढ़-दो महीने में नट-बोल्ट जिनसे हैन्डल जोड़ा जाता है वे घिस जाते हैं। दो-चार दिन की चिक-चिक के बाद नट-बोल्ट का प्रबन्ध किया जाता है।

क्या हैन्डल को एक या दो निश्चित जगहों पर रखना बहुत कठिन काम है ? क्या चार-पाँच रुपये के नट-बोल्ट का प्रबन्ध बहुत भारी होता है ?

आपस में तालमेल का ऐसा अभाव हमारी तकलीफें कितनी बढ़ा देता है और हमारे बीच कितनी कड़वाहट को जन्म देता है इससे हम सब परिचित हैं। क्या इसे बदलने की जरूरत नहीं है ?

★ एक मकान में छह किरायेदारों और उनके परिवारों को एक ही लैट्रीन से काम चलाना पड़ता है। लैट्रीन अक्सर जाम रहती है और उसका दरवाजा टूट जाता है। लैट्रीन का पानी का डिब्बा महीना-बीस दिन में जब टूट जाता है तब दो-तीन दिन कूढ़ने व परेशान होने के बाद डिब्बे का जुगाड़ होता है।

सब किरायेदार बड़ी फैक्ट्रियों में परमानेन्ट वरकर हैं। सब के पास अपने-अपने टी.वी. हैं। सब एक ही इलाके के हैं तथा एक ही जैसी जाति के हैं। अपनी भाषा में सब गप-शप भी काफी करते हैं। मकान मालकिन दूसरे शहर में रहती है।

आमतौर पर ऐसे में इस या उस जाति को दोष दिया जाता है, इस या उस इलाके को कोसा जाता है, बहुत कम वेतन वालों को जिम्मेदार ठहराया जाता है। ऐसे में जाति, इलाके आदि के नाम पर भेद व कड़वाहट ज्यादा फैलती है। लेकिन उपरोक्त मकान के विशेष हालात की वजह से जाति, इलाके आदि वाली गुमराह करने वाली दलीलें यहाँ नहीं हैं। इसलिये सवाल साफ-साफ रखा जा सकता है: अपनी रोज-रोज की और छोटी-मोटी परेशानियों को दूर करने के लिये भी हम आपस में तालमेल क्यों नहीं करते ? आइये सोचें और आपस में चर्चा करें।■

एक मजदूर के विचार (पेज चार का शेष)

होता है तो उसका आधे दिन का वेतन मैनेजमेन्ट काट लेती है — वरकर चाहे पानी पीने, पेशाब करने या फिर मैकेनिक को बुलाने ही क्यों न गया हो। एक दिन एक डिपार्टमेन्ट के 45 मजदूरों का आधा वेतन काटने का ऐसा आदेश मैनेजमेन्ट ने दिया। वरकर इकट्ठे हो कर लीडरों के पास गये तो उन्होंने उल्टे कहा कि तुम लोग अपनी जगह छोड़ कर क्यों जाते हो। तब उन 45 मजदूरों ने आधा दिन काम नहीं करने का फैसला किया और अपने-अपने कार्यस्थल पर बैठ गये। फैक्ट्री बन्द होने की नोबत से डर कर लीडरों और मैनेजमेन्ट में खुसर-पुसर हुई और वेतन काटने का आदेश वापस लिया गया।

हम जब मिलजुल कर विचार-विमर्श कर कदम उठाते हैं तब वह कदम छोटा हो चाहे बड़ा, किसी को गर्म नहीं करना पड़ता और न किसी में हवा भरनी पड़ती। सामुहिक कदम में किसी से कोई बात छिपानी भी नहीं पड़ती। सामुहिक कदम लीडरों, मैनेजमेन्टों, सरकारों के गलों में फन्दे हैं।

गीत

थाम लो साथी
मशालें थाम लो !

श्रम से चकनाचूर हैं पुट्ठे
खून के कतरे उबल उट्ठे
हाथ मत जोड़ो अँधेरे में,
बाजुओं से बाजुओं का काम लो !

कैद हैं अरमान सब अपने
कसमसाते भोर के सपने
स्याह रातों को मिटाने को,
कड़कड़ाती बिजलियों का नाम लो !

जुल्म के इस ठाठ को बदलें
घुन लगे इस काठ को बदलें
यदि नहीं बदले कुटिल मौसम,
आँधियों से द्रोह का पैगाम लो !

तब तलक ये दिन न बदलेंगे
जब तलक बाजू न मचलेंगे
जो हमें छलते रहे सदियों
उनसे गिन-गिन सारे इंतकाम लो !

—महेन्द्र नेह, कोटा (राजस्थान)

एस्कोर्ट्स में कैजुअल

एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट में कैजुअलों की दशा बहुत ही दयनीय है। कैजुअलों से गधों की तरह काम लिया जाता है। ना-नुकुर करने पर निकालने की धमकी दी जाती है। सबसे ज्यादा कैजुअलों की दुर्दशा इन्जन असेम्बली में होती है। यहाँ के सुपरवाइजर, जिन्हें लोग पालीवाल साहब कहते हैं, कैजुअलों से दुर्व्यवहार करते हैं और गाली-गलौज व हाथापाई करने से भी पीछे नहीं रहते। ओवर टाइम जब लगता है तो केवल उनकी चमचागिरी करने वाले कैजुअल ही ओवर टाइम लगा पाते हैं, अन्य कैजुअलों को वह भगा देते हैं। इस डिपार्टमेन्ट में फोरमैन महेन्द्र सिंह ही कैजुअलों का साथ देते हैं, इसी वजह से सभी कैजुअल उन्हें पसन्द करते हैं।

यहाँ पर हाजरी लगाने वाला शॉप क्लर्क जिसे सब "भाटिया साहब" कहते नहीं थकते, बहुत ही क्रूर व्यक्ति है। कैजुअल लगाने के 500 रुपये प्रत्येक कैजुअल से वसूल करता है। शराब के नशे में वह हमेशा रहता है। कम्पनी के वरकर अपनी हाजरी लगवाने के बदले "भाटिया साहब" को पैग पिलाते रहते हैं। जब किसी ने छुट्टी करनी हो, बस "भाटिया साहब" को पैग पिला दो हाजरी अपने आप लग जायेगी।

कम्पनी में शराब खुलेआम चल रही है जबकि पूरे प्रदेश में शराबबंदी लागू हो चुकी है। एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट में लॉकर अभी भी शराब की बोतलों से भरे हुये हैं। मैनेजमेन्ट को इस ओर ध्यान देना चाहिये या फिर जानबूझ कर मैनेजमेन्ट अनजान बनी हुई है।

17 अगस्त 96 —एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट के समस्त दुःखी कैजुअल

महँगाई बनाम नशाबन्दी

माननीय बंसी लाल जी ने जहाँ एक तरफ शराबबन्दी का पुण्य कार्य किया जिसके लिये उन्हें जितना धन्यवाद दो वह कम है वहीं दूसरी ओर महँगाई बेहिसाब बढ़ा के गरीब जनता की कमर तोड़ दी है। उन्होंने ये नहीं सोचा कि एक मजदूर जो कि आज हरियाणा सरकार के रेट से भी कम दिहाड़ी पा रहा है — 900 से 1170 तक — उसका गुजारा कैसे होगा। हर मालिक ने मकान भाड़ा बढ़ा दिया है। सब्जी में महँगाई : आज 6 रुपये किलो आलू, 10 रुपये किलो तोरी। सोचना यह है कि दिहाड़ीदार मजदूर को कितना बढ़ा कर दे रहे हैं ? देते हैं तो पा रहा है या दलालों के चंगुल में पिस रहा है? आज जो दैनिक वेतन है, कम्पनियों के दलाल उतने में से उसी का पेट काट कर अपनी जेबें भरते हैं। एक न्याय देखें : एक नया वरकर जब भर्ती होता है तब उससे सादा वाउचर पर फुल फाइनल हिसाब तथा रिजाइन पत्र पर उसी दिन साइन करवा लेते हैं जबकि वरकर ने काम भी शुरू नहीं किया होता। क्या सरकार ठेकेदारों की गुलामी से मुक्ति दिला कर उसे अपनी मेहनत का पैसा दिला सकती है ? क्या कुर्सियों पर बैठे अफसर ऐसा कर सकते हैं ? क्या इसका उत्तर है सरकार के पास कि ऐसी बहुत-सी कम्पनियाँ हैं, जिनमें लिमिटेड भी शामिल हैं, जहाँ ई.एस.आई. भी नहीं कटती ?

15 अगस्त 96,—वीरेन्द्र, फरीदाबाद.

ग़ज़ल

मैं सोचता हूँ मजदूर बदल जायें किसी तरह,
पास उनके मेरी ग़ज़ल जाये किसी तरह।
तपा रहा हूँ लफ्ज़ों को दिल के शोलों में इसलिये,
जहनों की बर्फ पिघल जाये किसी तरह।
इक रोज बदल जायेगी ये दुनिया,
पहले मेरा वजूद बदल जाये किसी तरह।
जुल्म के दरिन्दे को जख्मी कर देगी जुबां मेरी,
कमान से मेरी तीर निकल जाये किसी तरह।
बच्चा मचल गया था, जमीं पे चाँद के लिये
पानी में दिखा दिया वहल जाये किसी तरह।
मेरी नज़र में 'निसार' वह शख्स बहुत अच्छा,
जो गिर—गिर के सम्भल जाये किसी तरह।।

—निसार असगर 'निसार', सुलतानपुर (उ.प्र.)

गलती के लिये खेद: अगस्त अंक में जिसे ममता द्वारा लिखी कविता कहा गया था वह दरअसल सुरेन्द्र चतुर्वेदी की "आंधियों के बीच जो जलता हुआ मिल जायेगा" शीर्षक वाली ग़ज़ल थी।

आमतौर पर मजदूर खुद जो बताते हैं वही हम अखबार में दे पाते हैं। अपनी बात छपवाने के आपके कोई पैसे नहीं लगते। और हाँ, जो मजदूर अपनी बात छपवाते हैं उनके नाम हम किसी को नहीं बताते। अपनी बात हमें मिल कर बतायें या खत डाल दें। पता है —

मजदूर लाइब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
फरीदाबाद—121001

[illegible] जिक्र कर दें कि अखबार को [illegible] यह करते हैं। जो [illegible] पैसे [illegible] चाहते हैं वे अखबार [illegible] समय बेझिझक पैसे [illegible] हैं।■

प्रोविडेन्ट फन्ड पर डकैतियाँ

मजदूरों के प्रोविडेन्ट फन्ड (पी.एफ., भविष्यनिधि) के एक लाख दस हजार करोड़ रुपये इस समय भारत सरकार के कब्जे में हैं। ऊपर से हर महीने पी.एफ. की किस्त के तौर पर एक हजार करोड़ रुपयों से अधिक की राशि सरकार ले लेती है।

मजदूरों के पी.एफ. के पैसे हड़पने के लिये सरकार ने कम्पलसरी पेन्शन स्कीम शुरू की है। पेन्शन-रूपी सरकारी डकैती का विरोध बढ़ते देख सरकार ने पुराने मजदूरों की जेब कुछ कम काट कर माहौल ठन्डा करने की कोशिश की है। 15 नवम्बर 95 तक जमा पी.एफ. की रकम पूरी लौटाने की आड़ में छिपी है 15 नवम्बर 95 के बाद की आधी रकम हड़पने की हकीकत।

इधर सरकार ने मैनेजमेन्टों के साथ मिल कर मजदूरों के पी.एफ. के पैसों पर एक और डकैती डालने की योजना बनाई है। सरकार और मैनेजमेन्टों ने तय किया है कि मजदूरों के प्रोविडेन्ट फन्ड के पैसों को मैनेजमेन्टों के हाथों में सौंपने के लिये फन्ड के पैसों को कम्पनियों में लगाया जाये। इस नई स्कीम के अर्थ यह हैं :—

(क) मजदूरों के पैसों से मजदूरों के तन व मन और निचोड़ना : अब तक मजदूरों द्वारा पैदा किया जाता धन अप्रत्यक्ष ढँग से मजदूरों के शोषण का जरिया रहा है जबकि इस योजना द्वारा प्रत्यक्षतः, डायरेक्टली मजदूरों के पैसों से मजदूरों का शोषण किया जायेगा।

(ख) कम्पनियों के दिवालिया होने पर अब जो बैंकों के पैसे डूबते हैं उनकी जगह आगे से मजदूरों के भविष्यनिधि के पैसों को डुबोना।■

अहितकारी

26 अगस्त को **हितकारी पोट्रीज लिमिटेड** और **हितकारी चाइना लिमिटेड** के कुछ मजदूरों का एक लम्बा खत हमें मिला। उस खत के बारे में बात-चीत करने पर हितकारी ग्रुप की फरीदाबाद स्थित कम्पनियों की यह तस्वीर उभरती है :

कम्पनियाँ दो हैं पर मैनेजमेन्ट एक ही है। पाँच साल से हितकारी ग्रुप की इन कम्पनियों के मजदूर कुछ ज्यादा ही परेशान हैं। मैनेजमेन्ट ने 5 साल से वरकरों की वर्दियाँ व जूते नहीं दिये हैं। दो साल से मजदूरों के प्रोविडेन्ट फन्ड और ई.एस.आई. के पैसे नहीं जमा कराये हैं। कानून तक एक महीने और सात दिन काम करने के बाद एक महीने का वेतन देने का है परन्तु मैनेजमेन्ट बरसों से इसका पालन नहीं कर रही – इस दस अगस्त को महिला व पुरुष मजदूरों ने इकट्ठे हो कर आवाज उठाई तब भी चीफ परसनल मैनेजर ने कहा कि जुलाई का वेतन 13 अगस्त से पहले मैनेजमेन्ट नहीं दे सकती। दोनों फैक्ट्रियों की मशीनें, फर्श और छत खस्ता हाल में हैं। महीनों वेतन नहीं दिये जाने पर स्टाफ के लोग भी इतने परेशान हैं कि मजदूरों पर अंकुश लगाने का काम करते आये यह लोग भी अब मजदूरों से तालमेल की राह पर बढ़ रहे हैं। किन्हीं लेनदारों द्वारा दोनों कम्पनियों के बैंक खाते सील करवा देने की खबर है।

संक्षेप में कहें तो दोनों कम्पनियों की हालत खराब है। हितकारी पोट्रीज लिमिटेड तथा हितकारी चाइना लिमिटेड झालानी टूल्स-इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड-मैटल बॉक्स की राह पर हैं।

और जैसे कि हालत खस्ता होते जाने के साथ अन्य कम्पनियों की मैनेजमेन्टें संकट से पार पाने के लिये मजदूरों पर हमले तेज कर देती हैं, वैसा ही हितकारी ग्रुप में हो रहा है। उपरोक्त उदाहरणों के संग-संग इसके कुछ अन्य उदाहरण यह हैं :

- 65 साल की एक महिला मजदूर लाठी के सहारे फैक्ट्री आती हैं। वे अपना हिसाब माँग रही हैं पर मैनेजमेन्ट उन्हें हिसाब नहीं दे रही।
- कैजुअलों को मैनेजमेन्ट दो महीनों के लिये लगाती है पर दो महीने बाद उन्हें निकालने के समय एक महीने का वेतन देती है।

ऐसी स्थिति में पहुँची अन्य कम्पनियों की तरह ही हितकारी ग्रुप की इन कम्पनियों में भी मजदूरों के फन्ड व सर्विस तक के पैसे मैनेजमेन्ट फँसा रही है ताकि कम्पनियों को चालू रख कर इन्हें दुहना जारी रख सके। दुहना यानि कट/कमीशन/रिश्वत लेना। कम्पनी के खाते मुनाफा दिखा रहे हों चाहे घाटा, मैनेजमेन्टें अपने कट/कमीशन/रिश्वत को बदस्तूर जारी रखती हैं। हितकारी पोट्रीज और हितकारी चाइना से मैनेजमेन्ट ट्रक का ट्रक माल बिना गेट पास के बाहर निकाल रही है और तेल की गाड़ी की गाड़ी बाहर ही बाहर बेच रही है। 20 अगस्त को डी.सी. और लेबर अफसर का दौरा करवा कर हितकारी मैनेजमेन्ट ने कुछ अन्य रियायतें हासिल की हैं।

हितकारी मजदूरों ने इन कुछ वर्षो में भी कई बार खूब एकता प्रदर्शित की है और हर बार एकता की वेदी पर अपने हितों की बलि चढ़ाई है। अन्य फैक्ट्रियों की तरह हितकारी में भी लीडरों का बिकना अथवा निकाल दिया जाना आम बात रही है। फिर किसी लीडरशिप के इर्द-गिर्द एकता प्रदर्शित कर हितकारी मजदूर चाहें तो फिर ठोकर खा सकते हैं। जरूरत हितकारी पोट्रीज तथा हितकारी चाइना के 1200 स्त्री व पुरुष मजदूरों की साझीदारी वाले कदमों की है --- मजदूरों के हित सामुहिक कदम डिमान्ड करते हैं। इनके बारे में विचार करे। ■

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक–एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

छँटनी पर चुप्पी

जून 95 में मैनेजमेन्ट ने एक दिन सुबह दो मजदूरों का गेट रोक दिया। ड्युटी पर पहुँचे मजदूरों ने चक्का जाम कर दिया। चार घन्टे बाद मैनेजमेन्ट ने घुटने टेक दिये और उन दो वरकरों को ड्युटी पर लिया तब फैक्ट्री चली।

कुछ दिन बाद मैनेजमेन्ट ने 5 मजदूरों का गेट रोका। फिर मजदूरों ने चक्का जाम किया। फिर मैनेजमेन्ट ने घुटने टेके।

कारण ?

उस समय **ईस्ट इंडिया कॉटन मिल** के मजदूर किसी लीडर की नहीं सुन रहे थे। वरकर किसी को लीडर नहीं मान रहे थे और अपनी समझ व आपसी सहमति से कदम उठा रहे थे।

इस सिलसिले को जारी रखना सब मजदूरों के हित में होता है और इसे तोड़ना हर मैनेजमेन्ट की जरूरत होती है। मैनेजमेन्टें नये लीडर पैदा करती हैं और मजदूर खुद फैसले लेने छोड़ कर अक्सर नये लीडरों के मुँह ताकने लगते हैं..........

एक साल बाद, जुलाई और अगस्त 96 में :

(क) अजन्ता टेबल प्रिन्टिंग व कलर रूम में मैनेजमेन्ट ने 11 जुलाई को तालाबन्दी की और उनके वरकरों को जून की तनखा भी नहीं दी। बाकी फैक्ट्री सामान्य ढँग से चलती रही और काम कर रहे मजदूरों ने जून का वेतन भी ले लिया।

(ख) अगस्त में मैनेजमेन्ट ने 90 मजदूरों की छँटनी लिस्ट लगाई और पाँच-पाँच, छह-छह साल से काम कर रहे वरकरों का धक्के से हिसाब कर दिया। फैक्ट्री सामान्य ढँग से चलती रही और जबरन छँटनी पर चुप्पी साध कर बाकी मजदूर एग्रीमेन्ट की डुगडुगी पर नाचते रहे।

फिर मैनेजमेन्ट ने 65 मजदूरों की छँटनी लिस्ट टाँगी और फिर अपने साथी वरकरों के निकाले जाने पर चुप्पी व एग्रीमेन्ट डान्स।

तब मैनेजमेन्ट ने 140 मजदूरों की छँटनी लिस्ट लगा कर उन्हें निकाला और उपरोक्त ड्रामा जारी रहा। और सिलसिला जारी है।

कारण ? साल-भर पहले वाले ही 2200 ईस्ट इंडिया मजदूर हैं फिर इस सब का कारण क्या है ?

इस समय ईस्ट इंडिया के मजदूर लीडरों को मानते हैं और लीडरों के कहने पर ही यह वरकर उठते-बैठते, चलते-रुकते हैं। लीडरों ने छँटनी पर चुप्पी साध कर एग्रीमेन्ट के लिये पूजा-अर्चना आरम्भ की हुई है और उनका अनुसरण कर रहे, उनकी नकल कर रहे ईस्ट इंडिया के मजदूर अपने साथी वरकरों की छँटनी पर चुप्पी साधे एग्रीमेन्ट के लिये माला पहना कर व पहन कर आरती उतार रहे हैं।

"एग्रीमेन्ट के लिये लीडर बहुत मेहनत कर रहे हैं, रात-दिन भाग-दौड़ कर रहे हैं पर कोई सुनवाई ही नहीं हो रही। बेचारे इससे ज्यादा और क्या कर सकते हैं ! मैनेजमेन्ट बहुत बदमाश है.........."

और ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट मजे से छँटनी कर रही है। किसी भी मैनेजमेन्ट के लिये इससे बढ़िया कोई बातें हो सकती हैं क्या?

एक ईस्ट इंडिया मजदूर ने बात-चीत के दौरान पँजा दिखा कर कहा: आज फैक्ट्री में हालात यह हैं कि मैनेजमेन्ट द्वारा एक उँगली तोड़ते समय बाकी चार मुँह फेर कर चुप्पी साध रही हैं। मैनेजमेन्ट जब दूसरी उँगली पर हाथ लगा रही है तब बाकी बची तीन चुप्पी साध रही हैं...

लीडरों के पीछे चलने का यह एक और दुखद उदाहरण है। यह पीछे चलना जारी रहा तो ईस्ट इंडिया वरकरों के दुख-दर्द बढ़ेंगे ही।

जिनकी समस्या होती है वे उसके बारे में स्वंय विचार करने और बीस अन्य से उस पर चर्चा करने से बचते हैं। वे चाहते हैं कि सोचने और फैसले लेने का कार्य कोई और करे। हम चाहते हैं कि हमारी समस्याओं का समाधान कोई और करें। नतीजा है-लीडरों का फसल की तरह उगना। अपना ढर्रा छोड़े बिना फसल जहरीली होने का रोना रोते रहने से कुछ नहीं बदलेगा। ■

एकता बनाम सामुहिकता

सामुहिकता और एकता एक-दूसरे के उलट हैं। मजदूरों का लीडरों के पीछे चलना एकता है। मजदूरों द्वारा सोच-विचार कर मिल-जुल कर राजी से कदम उठाना सामुहिकता है। सीढ़ी/पिरामिड की तरह ऊँच-नीच लिये है एकता जबकि सामुहिकता बराबरी लिये है।

जून और फिर जुलाई अंक में प्रकाशित लेख 'एकता बनाम सामुहिकता' पर इस अंक में हम एक नौजवान शायर और एक फैक्ट्री मजदूर के अनुभव व विचार दे रहे हैं। इस बारे में आपके अनुभवों व विचारों का स्वागत है।

चार-पाँच साल छुट-पुट नौकरियाँ करने के बाद 25 साल से फरीदाबाद में एक फैक्ट्री में काम कर रहे मजदूर ने कहा :

जितने लीडर बने हैं वे मजदूरों से एकता के नाम पर झूठ बोलते हैं। एकता के नाम पर मजदूरों का शोषण करवाया जाता है। नारा दिया जाता है कि एक के लिये सब और सब के लिये एक। जब लीडरशिप का व्यक्तिगत स्वार्थ होता है तो किसी एक के पीछे पूरा ही प्लान्ट बन्द करा देते हैं परन्तु उनका व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं होता है तो 15-20 वरकरों की आवाज को भी पैरों तले कुचल देते हैं। हमारी फैक्ट्री में एक डिपार्टमेन्ट के कुछ मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने वर्क लोड बढाने का विरोध करने पर बाहर कर दिया। उस डिपार्टमेन्ट के वरकर जब लीडरों से कहते कि कोई कदम उठाओ तब लीडर कहते कि तुम 12-14 के पीछे क्या पूरी फैक्ट्री बन्द कर दें, ऐसा नहीं होगा। पुराने और फिर नये लीडरों ने कोई कदम उठाने की बजाय बाहर किये वरकरों की नौकरी बचाने व उनके बच्चों की रोटी का सवाल है जैसी बातें करके घुमा-फिरा कर मजदूरों को मैनेजमेन्ट की पालिसियाँ मानने को मजबूर किया। जबकि, कुछ समय पहले एक लीडर की एक मैनेजर से कहा-सुनी हो गई तब एकता के नाम पर लीडरशिप ने फैक्ट्री बन्द करा दी और फिर अपने निजी मुफाद के लिये मैनेजर के घर जा कर फैसला कर लिया — दिहाड़ी का नुकसान तमाम मजदूरों का हुआ।

इस समय तमाम मजदूर यूनियनों में लीडर लोग बिल्कुल एकदम से झूठ बोलते हैं। एकता के नाम पर अपने को ऊँचा उठा कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेते हैं। मजदूरों को बरगला कर अपने-अपने गुन्डा गिरोह में इकट्ठा कर के मजदूरों को एक-दूसरे से लड़वा देते हैं। तमाम मजदूरों को एक नहीं होने देते। मजदूरों का कोई देश नहीं, कोई जात नहीं, कोई धर्म नहीं, कोई पार्टी नहीं। मजदूरों का एक ही धर्म है — मजदूरी। लेकिन लीडर लोग मजबूरी वाली मजदूरी को भुनाने के लिये मजदूरों को बरगला कर सरमायेदारों से भी अधिक शोषण करते हैं।

मीटिंग में यदि कोई मजदूर अपने विचार रखना चाहता है तो उसका मुँह बन्द करके और मजदूरों को उसके खिलाफ भड़का कर उसकी निन्दा की जाती है। यदि कोई मजदूर लीडरों का हितैषी है, लीडरों की हाँ में हाँ मिलाता है तो उसकी वाह-वाही करते हैं। किसी मसले को अपने मुफाद के लिये लीडर लोग अपनी बुद्धि से जैसा चाहते हैं करते हैं। उसमें किसी भी मजदूर की राय नहीं ली जाती। इसका मतलब लीडर मदारी की तरह डन्डा ले कर एकता के नाम पर मजदूरों को नाच नचाते हैं। इसलिये मजदूरों को ऐसी लीडरों की एकता से ऊपर उठ कर उसका जम कर विरोध करना चाहिये। तमाम मजदूरों को यही नारा चाहिये : "न कोई पार्टी, न कोई जात, न कोई धर्म, न कोई देश, न किसी फैक्ट्री का दायरा, न कोई झन्डा — न लाल, न पीला, न तिरंगा" क्योंकि दायरों में बाँध कर यह मजदूरों को मजदूरों से लड़ा कर मजदूरों को एक होने से विचलित करते हैं। इसलिये ऐसी एकता तोड़ना जरूरी है।

यदि कोई वरकर व्यक्तिगत कदम उठाता है तो वह कितना ही महत्वपूर्ण कदम क्यों न हो, उसमें सफलता पाना नामुमकिन है क्योंकि एक तो सरमायेदार का फन्दा और दूसरी एकता के नाम पर लीडरों की बेड़ियाँ। मजदूरों के लिये हितकारक किसी के भी व्यक्तिगत कदम को सरमायेदार व लीडर भरपूर कोशिश करके उखाड़ देते हैं। इसलिये व्यक्तिगत कदम उठाने में भय और डर रहता है। यदि सामुहिक कदम उठाया जाता है तो उसमें पूर्ण विजय की आशा होती है। सामुहिक कदम उठाने पर सरमायेदार किसी को चार्ज नहीं कर सकते, पुलिस द्वारा आतंकित नहीं करवा सकते और सब की रोजी-रोटी बरकरार रहती है। इसलिये हम सब को सोचने पर मजबूर होना पड़ेगा कि फ्राड लीडरशिप से और सरमायेदारी के खिलाफ कैसे इकट्ठा हो सकते हैं। हमारी फैक्ट्री में क्वालिटी चेक करने के नाम पर जी. एम. द्वारा पूरे वर्कशॉप में दौड़ लगाते समय कोई मजदूर अपने कार्यस्थल पर नहीं

(बाकी पेज एक पर)

सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश से 26 जुलाई को नौजवान शायर निसार असग़र 'निसार' अपने खत में लिखते हैं :

एकता है तो बोलना मना है। खामोशी जरूरी है। बिना जाने, बिना समझे चलना है। मंजिल कुछ भी हो।

सामुहिकता में पहले जानो, सोचो फिर चलो, अन्जाम कुछ भी हो मन्जिल का पता मालूम होता है। आप और हम बोल सकते हैं।

एकता ? एक सवालिया निशान : क्या एकता इन्सान को सुख और सुकून दे सकती है ?

एकता =एक+अता —एक+मिला (अता मायने मिला)

एकता है यानि एक मिला है। क्या मिला है ?

बलि का बकरा ! नहीं-नहीं जनाब, "शैतान का बेटा" — मतलब लीडर है। तो शैतान कौन ? इशारा मैनेजमेन्ट की तरफ होता है। तो गीत गाइये —

पैदा हुआ लीडर तो इबलिस ने ये कहा,
लो आज हम भी साहिबे औलाद हो गये।

> इबलिस — शैतानों के मुखिया का नाम है, यानि मैनेजमेन्ट ....

एकता बड़ी या सामुहिकता
शैतान बड़ा या भगवान

सिर्फ दो रास्ते : एक स्वर्ग, दूसरा नरक जाता है। जिन्दगी के दोराहे पर खड़े मजदूरो सोच लो तुम्हें किधर जाना है।

एकता निशान है तानाशाही का, मक्कारी का, झूठ और बेइमानी का। असत्य परम धर्म है।

सामुहिकता प्रतीक है ईमानदारी, भाइचारगी, इखलाक और मोहब्बत का। सत्य ही धर्म है।

शैतान (एकता) बहुत प्रबल है। वह हमें बहुत दिनों तक गुलाम बना कर रखने की कोशिश करेगा। हमें तबाह करना चाहेगा। हमें आपस में लड़वायेगा। लालच दे कर गुमराह करने की कोशिश करेगा।

एकता हमारी दुश्मन है। इससे बगावत करनी होगी। **"हक के लिये आवाज न उठाना भी बुजदिली है" :** महाभारत में कृष्ण ने अर्जुन से कहा था — हक के लिये लड़ो। कर्बला का खूनी मंजर सिर्फ हक के लिये था, धर्म के लिये था। गुलाब के लिये काँटों से लड़ना ही होगा।

एकता को हराने का एक ही रास्ता है : सामुहिकता, जो कह देने भर से नहीं हो जाती। इसके लिये हमें मानसिक तौर पर सामुहिक होना पड़ेगा। तब होगी फतेह — **एकता पर सामुहिकता की।**

एकता खत्म होने जा रही है — वह एकता जो लहू पीती है, खून की नदियाँ बहाती है। वह दिन दूर नहीं जब अमन होगा, चैन होगा, लोगों के जहन से बर्फ पिघल जायेगी।

मै उस दिन के इन्तजार में हूँ, वह दिन आ रहा है जब एकता भंग होगी। हमारा सोया हुआ जमीर जागेगा। खामोशी को जुबां मिल जायेगी।

तब एक बुलन्द आवाज उठेगी। **"इन्कलाब जिन्दाबाद"..** ... इन्कलाब ही अमन है। अमन ही धर्म। लोगों में सामुहिकता होगी और होगी **विजय " एकता पर सामुहिकता की"।**

"नाहक पर हक़ की फतेह"

अधर्म पर धर्म की। झूठ पर सत्य की।

"सत्यमेव जयते"......... ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक [illegible] शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।